व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 19 अंक : 78

जनवरी-मार्च: 2024

संदीप राशिनकर

ज्ञान चतुर्वेदी के 'पागलखाना' पर त्रिकोणीय में गौतम सान्याल, प्रेम जनमेजय, शिवकेश, अरुणा कपूर, राहुल

ममता कालिया से समकालीन व्यंग्य पर रणविजय का संवाद

पाथेय, चिंतन, व्यंग्य-रचनाएं, इधर जो मैंने पढ़ा और समाचार

मूल्य ₹ 20

सम्मान/पुरस्कार
व्यंग्य यात्रा की शुभकामनाएं

संजीव को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित करते माधव कौशिक (अध्यक्ष) कुमुद शर्मा (उपाध्यक्ष) अमर उजाला सम्मान समारोह की छवियां

पुष्पा भारती को 33 वां एवं ज्ञान चर्तुवेदी को 32 व्यास सम्मान

इंडिया नेटबुक्स सम्मान समारोह की छवियां

राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान और दामोदर खड़से अमृतोत्सव आयोजन की छवियां

कोचिन विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 'परसाई के रचना संसार' दो दिवसीय संगोष्ठी की छवियां। इसका उद्घाटन कुलपति पी जी शंकरन के कर कमलों से हुआ।

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

जनवरी–मार्च 2024

वर्ष–19 अंक–78

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

फोन : 011-470233944
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल–
yatravyangya2004@gmail.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री

मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णतः अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन घिसैं 4-6

पाथेय 9-12

बेढ़ब बनारसी– लफ्टंट पिगसन की डायरी 7

नरेंद्र कोहली– अमरीकन जांघिया 9

रविन्द्रनाथ त्यागी– कविताएं 11

यज्ञ शर्मा– आयी लक्ष्मी गयी लक्ष्मी 12

चिंतन 13-19

विजयेन्द्र स्नातक– सामाजिक चेतना में हास्य-व्यंग्य की सार्थक भूमिका 13

सरोज कुमारी– व्यंग्य सत्ता का स्थायी प्रतिपक्ष है 15

संतोष श्रीवास्तव– व्यंग्य का सार्वभौमिक स्वरूप 18

व्यंग्य विमर्श के संवादी 20-25

ममता कालिया– ....भयग्रस्त होकर नहीं, सर पर कफन बांध कर लिखना होता है। **(रणविजय राव से संवाद)** 20

त्रिकोणीय में 'पागलखाना' 26-40

प्रेम जनमेजय– ....विसंगतियों से मुठभेड करने वाला महाकाव्य 26

ज्ञान चतुर्वेदी– दुविधा में हूं, क्या कहूं? 27

ज्ञान चतुर्वेदी– कौन तय करे कि पागल कौन है 30

अरुणा कपूर– हमारे समय की बेहद निर्मम, क्रूर और निष्ठुर कथा 33

गौतम सान्याल– मानसिक विक्षिप्तियों के माध्यम से उभरता युग-सत्य 34

प्रभु जोशी– पागलखाना: बाजारवाद पर एक आधुनिक क्लासिक 35

शिवकेश– चुटकी काटने की कटौती! 36

राहुल देव– बाजार के चंगुल में फंसे भयावह समय का कथानक 38

गद्य व्यंग्य 41-85

राजेश कुमार– मुक्ति बंधन 41

श्रीकांत चौधरी– दी वेजिटेबल टाइम्स 45

योगेन्द्र नाथ शुक्ल के लघु व्यंग्य 48

प्रदीप पंत– करिश्मा भ्रष्टाचार पवित्रीकरण मशीन का 49

रजनी शर्मा बस्तरिया– भोकवा पहाड़ के उन्नीस दांत 50

श्रवण कुमार उर्मलिया– किसी को माया किसी को राम 52

अरविंद विद्रोही– राजनीति में पलटासन 54

सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'– कब सुधरोगे 54

रामस्वरूप दीक्षित– बस यात्रा का आनंद 55

सूर्यकांत नागर– जुगाड़चंद 56

अजय अनुरागी– गली का कुत्ता 57

चित्रगुप्त– ट्रेन में एक दिन 59

गिरिराज शरण अग्रवाल– अस्पताल से आकर 60

दीपक गोस्वामी– आपदा में अवसर 61

लालित्य ललित– पांडेय जी का नया मामला 64

बसन्त राघव– मूक अन्तरात्मा 65

अखिलेश श्रीवास्तव चमन– सत्य की सत्यता 66

दलजीत कौर– भ्रम 66

जवाहर धीर– जब जोशी जी रिटायर हुए 67

हरभगवान चावला– आग्रह 68

अरुण कुमार जैन– कुत्ता राजनीति 69

गोपाल राजगोपाल– तोलाराम का जीव 70

दीप्ति सारस्वत प्रतिमा– फिल्दी माउथ 72

नीलम कुलश्रेष्ठ– ...पुनर्जन्म के आइडिया का 73

रणजोध सिंह– शुभारम्भ 74

विनोद पाराशर– लंगोट वाले बाबा! 75

ललन चतुर्वेदी– अफसरी का पहला दिन 77

विजय विशाल– बन्दरों का पुनर्वास 78

मूसा खान अशांत बाराबंकवी– कुर्सी है बप्पा और माई 79

दिनेश गंगराड़े– भ्रष्टाचार समस्याएं बन गया...? 80

अश्वनी शांडिल्य– मेरा भारत...मेरी मर्जी 81

अनन्त आलोक– मौन अनशन 82

विनोद कुमार विक्की– रहस्यमयी लोतांत्रिक स्वप्न 83

लोक सेतिया– कलयुग की आत्मकथा 84

रेखा शाह आरबी– स्मार्टफोन और साहब 85

पद्य व्यंग्य 86-92

गोलेन्द्र पटेल, इंदिरा किसलय, अनुपमा अनुश्री, सुभाष राय, अनुज प्रभात, घनश्याम अवस्थी, गुरविंदर बांगा, कमलेश भारतीय, प्रभा मुजुमदार

इधर जो मैंने पढ़ा- 93-99

प्रेम जनमेजय– ...अक्क महादेवी 93

मधु कांकरिया– दहकते सवालों का जीवंत दस्तावेज 94

स्त्री की रचनाशीलता पर केंद्रित– 'हंस' का मार्च अंक 95

श्रवण कुमार उर्मलिया– सफल मंच-संचालक की विशिष्ट पुस्तक 96

डॉ. नीरज दइया– 'पर्दा न उठाओ' संग्रह में पर्दा उठाने का महारस' 97

अतुल तिवारी– मटन-मसाला-चिकन-चिली 98

गिरीश पंकज– दिनमान और त्रिलोक दीप पर... 99

समाचार 100-104

अब आप

आर.टी.जी.एस.

द्वारा 'व्यंग्य यात्रा' को अपना आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा

बैंक का नाम : केनेरा बैंक

शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक

खाता संख्या : 3223201000092

IFSC Code : CNRB0003223

आरंभ

भारत ऋतु प्रधान देश है, पर इस देश का एक मौसम ऐसा है जो राजनीति, धर्म, अर्थ काम मोक्ष, खेल आदि में प्रतिदिन चौबीसों घंटे बना रहता है। यह मौसम है गड्ढों का मौसम। सरकारें आएंगी जाएंगी, पक्ष-विपक्ष का खेला चलता रहेगा, पर देश में गड्ढे बचे रहेंगे। कुछ गड्ढे खोदेंगे तो कुछ गड्ढों को पाटेंगे। कुछ गड्ढों से प्यार करेंगे और कुछ गड्ढों पर तकरार करेंगे। कुछ दूसरों के लिए खोदेंगे और कुछ अपने लिए खुदवायेंगे। राजीनिति में पक्ष-विपक्ष का ये गड्ढा खेला चौबीसों घंटे चलता रहेगा।

साहित्य में सम्मान और पुरस्कार को लेकर गड्ढों का खेला चलता रहता है। पुरस्कार स्वयं को मिले तो जेनविन होता और कतार में खड़े रहने वालो को न मिले तो जुगाड़ होता है। जैसे डिजिटल युग में किताब की 10 बीस प्रतियां छापकर प्रकाशक लेखक महान लेखक होने की झाड़ पर चढ़ाते हैं वैसे ही सम्मान समोराह आयोजक शालधारी अमूल्य सम्मान द्वारा नए लेखकों को झाड़ पर चढ़ा देते हैं। वे उसे इतना झाड़ पर चढ़ा देते हैं कि सम्मान का मारा हवाई जहाज से आता है और मूल्य खर्च कर मूल्यवान सम्मान ग्रहण करता है। मुझे लगता है कि इसमें दोष गड्ढा खोदने वाले का भी उतना ही दोष है जितना उसमें गिरने वाले का। जब आप आंखों देखी मक्खी निगलोगे तो दोष...।

सम्मान प्रसंग इतना प्रिय होता है कि प्रति रविवार वाले अपने स्तंभ में अनंत विजय विवादों में लेखक और प्रकाशक संबंध की बात करते-करते संजीव के अकादेमी पुरस्कार को घसीट लेते हैं। अनंत विजय लिखते हैं, 'वस्तुत: संजीव हिंदी के ओवररेटेड लेखक हैं। उन्होंने सूत्रधार नाम से एक उपन्यास लिखा था। उनकी विचारधारा के लेवकों ने उसे चर्चित करने का प्रयास किया, परंतु तात्कालिक चर्चा के बाद वह उपन्यासों की भीड़ में गुम हो गया। गाहे बगाहे वे विवादित बयान देते रहते हैं, पर उसका नोटिस भी हिंदी जगत नहीं लेता।'

इन दिनों राजनीति में आई आम चुनाव ऋतु के कारण शेष ऋतुएं पार्श्व में चली गई हैं। चुनाव आयोग ने जैसे ही चुनाव की घोषणा की वैसे ही मेरी पड़ोसी राधेलाल ने गाना शुरु किया- आया मौसम गड्ढों का।

मैंने कहा, 'प्यारे राधेलाल! माना तेरा सुर टिकट न पाए देशसेवक-सा बेसुरा है, गाने के बोल तो कम-से-कम सही बोल। गाने के बोल हैं- आया मौसम प्यार का।

राधेलाल ने मेंढकों की तरह आंखें मटकाते हुए कहा (जब चुनाव में मेंढक तुल सकते हैं तो वे आंखें क्यों नहीं मटका सकते) 'जो चुनाव से करते प्यार वो गड्ढों से कैसे कर सकते इंकार।'

'चुनाव का गड्ढों से संबंध...मेरे गले नहीं उतर रहा।'

'तेरे गले तो एक ही चीज उतर सकती है और वह भी शाम को...'

'तूं तो पर्सनल हो जाता है। मैं बात कर रहा हूं चुनावकाल की और तूं...'

'प्यारे! यह चुनावी बयार का असर है। इस काल में सबकी जन्मपत्री खुलती है। जिसे अपने व्यक्तिगत जीवन से है प्यार उन्हें चुनाव के कीचड़ का सूअर नहीं बनना चाहिए। जैसे वर्षाकाल में कीचड़ और सीवर एक हो जाते हैं वैसे ही चुनावकाल में होता है। कुछ बालपन कीचड़ उछाल मात्र का सुख लेते हैं और कुछ सूअर बन...इस काल में बांह छुड़ाकर कोई जाए और तो उसे गड्ढे में गिरा जान उसपर कीचड़ फेंक दिया जाता है। पर जब वो देर सबेर गाता है कि हम तो तेरे आशिक है बरसों पुराने तो उसे अपने कर कमलों उसे गड्ढे से बाहर निकालते हैं, गले लगाते हैं। इन दिनों कोई गड्ढे में गिर तो उसपर हंसने और वुद गड्ढे पर गिरे तो शहीद होने का मौसम है।

इधर चुनाव आयोग के सामने विपक्ष ने ई वी एम का बड़ा गड्ढा वोद दिया है। गड्ढे ने चुनाव आयुक्त को शायर बना दिया है।

चुनाव आयुक्त लाव कहें-
अधूरी हसरतों का इल्जाम
हर बार हम पर लगाना ठीक नहीं
वफा वुद से नहीं होती
वता ई वी एम की कहते हो।

चुनाव आयोग के आगे विपक्ष का कुआं है और पीछे सत्ता की वाई है।

खैर हम तो साहित्यकार हैं, हमें इन सबसे क्या लेना-देना।

हरिशंकर जन्मशति समारोह- बहुत कम होता है कि किसी रचनाकार की जन्मशति पूरे वर्ष धूमधाम से मनाई जाए। हरिशंकर परसाई ऐसे व्यंग्यकार हैं, जो अपने उत्तरकाल में नहीं मानते थे कि उन्होंने व्यंग्य लिखा अपितु यह मानते थे कि उन्होंने कहानियां और निबंध लिखे। ऐसे परसाई की जन्मशति व्यंग्यकार लगभग पूरे धूमधाम से मना रहे हैं। पिछले दिनों एक समारोह टिमरनी में मानया गया। टिमरनी में जाने-माने कवि-आलोचक विजय बहादुर ने कहा, 'यहाँ टिमरनी में पहले भी हजारों लोगों ने जन्म लिया और गमन कर गये, पर परसाई ने टिमरनी की माटी से जो अर्जित किया, उसका कर्ज चुकाने के लिये अपना पूरा जीवन लगा दिया। टिमरनी उन्हें कभी कैसे भूल सेती है। परसाई जी ने वह नहीं लिखा, जिसे समाज पसंद करे, बल्कि वह लिखा जिससे समाज का पाखंड उजागर हो। वे इसके लिये पीटे भी गये। जो समझते हैं कि समाज को डंडों की ताकत से चलाया जा सकता है, वे समाज-विरोधी मानसिकता के लोग हैं, समाज परसाई जैसे लेखकों से चलता, बनता और आगे बढ़ता है।'

राजेंद्र चन्द्रकान्त राय के द्वारा लिखी गयी परसाई जी की औपन्यासिक जीवनी 'काल के कपाल पर हस्ताक्षर' में टिमरनी के उन स्वाधीनता सेनानियों का भी जिक्र किया गया है, जिनके समय में परसाई जी स्वाधीनता आंदोलन के प्रति आकर्षित हुए थे और प्रभात फेरियों में हिस्सेदारी किया करते थे। आयोजन में ऐसे सेनानियों के पुत्रों, पौत्रों और प्रपौत्रों को सम्मानित करके सेनानियों के प्रति अपनी कृतज्ञता को प्रकट किया।

दूसरा आयोजन कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग की परसाई की रचनाशीलता पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। दक्षिण भारत में यह आयोजन, परसाई के रचना संसार पर विमर्श के बहाने, व्यंग्य विमर्श जमीन की सुदृढ़ परंपरा का आरंभ है। दक्षिण में व्यंग्य-पीठ की स्थापना जैसा। इसे संभव बनाया- कुलपति पी जी शंकरन के अप्रतिम सहयोग, उनकी गरिमामय उपस्थित, हिंदी विभाग की विभाग अध्यक्ष डॉ. प्रणिता के मार्गदर्शन और आयोजन सचिव डॉ. ए.के. बिंदु की संगठन क्षमता के कारण बनी, नेपथ्य में रहने वाली उनके सहयोगियों की पूरी टीम ने। उद्घाटन सत्र से लेकर समापन सत्र तक, सात विभिन्न सत्रों में, 35 के लगभग विद्वानों